इकाई 6 लैटिन अमेरिका में आर्थिक उदारीकरण और सार्वभौमिक निर्भरता

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना

6.2 आर्थिक उदारीकरण और विकास

6.2.1 आर्थिक उदारीकरण क्या है?

6.2.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

6.2.3 विदेशी निवेश की भूमिका

6.2.4 आर्थिक उन्नति और विकास में वर्तमान प्रवृत्तियाँ

6.3 सार्वभौमिक निर्भरता

6.3.1 निर्भरता क्या है?

6.3.2 मुख्य पक्ष

6.4 उन्नति और विकास के महत्वपूर्ण सिद्धान्त

6.4.1 उदार बहुलवादी सिद्धान्त

6.4.2 निर्भरता/विश्व व्यवस्था सिद्धान्त

6.4.3 विकासात्मक राज्य

6.4.4 नव-उदारवादी राज्य

6.4.5 सिद्धान्तों को लागू करना

6.5 सारांश

6.6 अभ्यास प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

आर्थिक उदारीकरण और सार्वभौमिक निर्भरता आर्थिक उन्नति और विकास की परस्पर अंतर्सम्बंधित प्रक्रियाएँ हैं। एशिया और अफ्रीका के अधिकतर नए स्वतंत्र राष्ट्रों के द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विकास सर्वोच्च प्राथमिकता बन गई थी। और लैटिन अमेरिका में तो अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा काफी समय पूर्व ही 1930 के दशक में विकास लहर आरंभ हो गई थी। आर्थिक उदारीकरण और सार्वभौमिक निर्भरता की चर्चा करने से पूर्व आर्थिक उन्नति और इस आर्थिक उन्नति से हमारा अभिप्रायः मुख्यत राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में या उसके किसी विशिष्ट क्षेत्र में प्रकट होने वाला समग्र उत्थान है। समग्र सामाजिक विकास को आमदनी वितरण, संभावित आयु, शैक्षणिक उपलब्धि, स्वास्थ्य स्तर और इसी प्रकार के अन्य तथ्य जो किसी राष्ट्र के अधिकतर नागरिकों के कल्याण क्षेत्र में आम सुधार के रूप में परिभाषित किए जा सकते है। इसके बाद हम देखेंगे कि किस प्रकार आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रियाएँ और सार्वभौमिक निर्भरता के स्वरूप लैटिन अमेरिका में उन्नति और विकास के विषयों को समझने में व्याख्या करते हैं। यह इकाई लैटिन अमेरिका में दोनों क्षेत्रों के कुछ महत्वपूर्ण संकल्पनाओं, सम्बंधित सिद्धान्तों और वर्तमान प्रवृत्तियों से अवगत कराती है।

6.2 आर्थिक उदारीकरण और विकास

6.2.1 आर्थिक उदारीकरण क्या है?

साधारणतः आर्थिक उदारीकरण बाज़ार शक्तियों के मुक्त संचालन, उत्पादन, वितरण और बड़ी वस्तुओं और सेवाओं के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में राज्य के न्यूनतम नियंत्रण पर ज़ोर देता है और यह विदेश व्यापार, विदेशी निवेश और घरेलू अर्थव्यवस्था में नई तथा आधुनिक तकनीक को शामिल करने पर ध्यान केन्द्रित करता है।

6.2.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

लैटिन अमेरिका की खोज के बाद क्षेत्र का आर्थिक विकास अधिकांशतः बाहरी शक्तियों के द्वारा निर्धारित किया गया था। सर्वप्रथम स्पेनी और पुर्तगाली औपनिवेश के रूप में प्रकट हुआ जिसके परिणामस्वरूप मरुभूमियों में अत्यधिक मात्रा में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हुआ। इसके बाद उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में राजनीतिक स्वतंत्रता के वर्षों में दोहन केन्द्र इबेरिया से हटकर पश्चिमी यूरोप और संयुक्त राज्यों में स्थानांतरित हो गए। आधुनिक लैटिन अमेरिकी अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक ऐतिहासिक काल के सभी वर्षों में मूलभूत संसाधन क्षेत्रों ने इस क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सोलहवीं शताब्दी के आरंभ से तथा स्पेन और पुर्तगाल द्वारा क्षेत्र में औपनिवेश बनाए जाने से लेकर बीसवीं शताब्दी तक अधिकांश आबादी मूलभूत क्षेत्रों में लगी हुई थी जो खेती, खनन, वानिकी तथा मछली पालन से अपना जीवनयापन कर रही थी। ये क्षेत्र जिसके अधिकतर उत्पादों का लक्ष्य हमेशा निर्यात होता था। 1930 के दशक की भारी मंदी तक प्रत्येक लैटिन अमेरिकी देश में गतिशीलता और उन्नति का साधन रहे है। इस क्षेत्र के निर्यात सम्बंधित अधिकतर उत्पादों में प्रायः कच्चा माल जैसे ताम्बा, तेल, स्वर्ण, टिन, लौह अयस्क और कहवा, कोक और चीनी जैसे कृषि उत्पाद होते हैं। इन सभी उत्पादों का क्षेत्र के निर्यात में एक समय में निर्यात नहीं होता था। अंतिम अनेक शताब्दियों ने अनेक उत्पाद निर्यात क्षेत्र के व्यापार पर आधिपत्य रखने वाले समय के अनुसार भिन्न भिन्न रहे हैं। एक समय के बाद आर्थिक गतिविधि के स्थान और स्वरूप में परिवर्तन होते रहे हैं क्योंकि रोज़गार, आमदनी और व्यापार के मुख्य स्रोतों के रूप में क्षेत्र के स्वरूप को प्रभावित किए बिना उत्पाद परस्पर बदलते रहे हैं।

6.2.3 विदेशी निवेश की भूमिका

विदेशी बाज़ारोन्मुखी अर्थव्यवस्थाओं में विदेशी निवेश ने ऐतिहासिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह लैटिन अमेरिका के लिए भी सत्य था। जब औपनिवेश के आरंभिक काल में विदेशी निवेश ने लैटिन अमेरिका में प्रवेश किया तो इसका स्पष्ट उद्देश्य निर्यात के लिए कच्ची धातुएँ निकालना था बहुमूल्य धातुओं की माँग समाप्त होने के बाद और अधिक समय तक क्षेत्र में मूल्यवान धातुओं की उपलब्धता न होने से कृषि मुख्य व्यवसाय बन गया था। संपूर्ण लैटिन अमेरिका में दोहन और पुनर्वास के लिए बहुमूल्य धातुओं की खोज करना मुख्य उद्देश्य था। जनसंख्या का वितरण विभिन्न क्षेत्रों में उस खोज की सफलता के अनुसार होता था। मुख्य केन्द्र वास्तव में अर्थव्यवस्था की भिन्नताओं और विकास के लिए एकमात्र बाज़ार थे। धीरे-धीरे बहुमूल्य धातुओं का दोहन खनन कार्य में परिवर्तित हो गया और खदान विकास के लिए खाद्य उत्पादन बढ़ाने, पशु चरागाह स्थापित करने तथा आसपास के क्षेत्रों में पशु फार्म बनाने की आवश्यकता पड़ी।

यूरोपीय महाद्वीप में औद्योगिक क्रान्ति होने से सभी प्रकार के कच्चे माल की तलाश में वृद्धि हुई। सस्ते कच्चे माल और बाज़ार की पूरे विश्व में तलाश से लैटिन अमेरिका में ब्रिटिश निवेश का प्रवेश आरंभ हुआ। ब्रिटिश निवेश के तुरन्त बाद फ्रांसीसी, ज़र्मनी और डच निवेश ने भी इसका अनुसरण किया।

1800 के दशक के आरंभ में औपनिवेशवाद के समाप्त होने के बाद नए स्वतंत्र हुए लैटिन अमेरिकी देशों की आर्थिक शक्ति मुख्यतः उत्पादकों, जमींदारों और खदान स्वामी वर्ग के हाथों में केन्द्रित हो गई जो इस क्षेत्र के लगभग संपूर्ण निर्यात करने वाले वर्ग थे। खदान-स्वामी वर्ग को इससे विशेष लाभ हुआ क्योंकि मुक्त व्यापार से उसे उत्पादित अपने कच्चे माल के लिए विस्तृत बाज़ार मिला और आयात के माध्यम से पूँजीगत वस्तुओं की उसकी आवश्यकताएँ पूरी होती रही।

लैटिन अमेरिका के प्राकृतिक संसाधन क्षेत्र को विश्व अर्थव्यवस्था में शामिल करने के लिए यूरोपवासियों ने निर्यात के लिए परिवहन और अन्य आधारभूत संरचनाओं तथा स्रोतों को संसाधित करने वाले उद्योगों में निवेश किया। निर्यात के लिए तेल और धातुओं के विकास के बाद बड़े विदेशी बहुराष्ट्रीय निगमों (MNCs) द्वारा प्रत्यक्ष निवेश बहुत महत्वपूर्ण हो गया। चूँकि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यह क्षेत्र विश्व अर्थव्यवस्था के साथ पूरी तरह जुड़ गया था। अतः इसके कच्चा माल का निर्यात औद्योगिक गतिविधियों की गतिशीलता के बावजूद काफी बढ़ गया और उन्नत यूरोपीय राष्ट्रों की आमदनी में और अधिक वृद्धि होने लगी।

संयुक्त राज्य अमेरिका के निवेश ने यूरोपीय मार्ग का अनुसरण किया और बीसवीं शताब्दी के मध्य तक उसने इस क्षेत्र में विदेशी निवेश के मुख्य स्रोत के रूप में इसे प्रतिस्थापित कर दिया। चूँकि लैटिन अमेरिका अफ्रीका और एशिया की तुलना में कच्चे माल का बड़ा स्रोत बन गया था तथा औद्योगिक क्रान्ति एवं अर्ध औद्योगिक वस्तुओं को खपाने का बड़ा बाज़ार बन गया था इसलिए संयुक्त राज्य अमेरिका ने लाभ अर्जित करने की अपनी सार्वभौमिक नीति के संदर्भ में इसमें व्यापक संभावनाएँ देखी।

1960 तक संपूर्ण लैटिन अमेरिका कुल संयुक्त राज्य अमेरिका के माल निर्यात का लगभग पाँचवा हिस्सा खपाने वाला तथा इसके द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका की वस्तुओं का एक महत्वपूर्ण बाज़ार बन चुका था। इसमें शामिल की टिकाऊ उपभोक्ता सामान, पूँजीगत वस्तुएँ और उपकरण तथा अर्ध औद्योगिक सामान तथा शस्त्रों की बिक्री। लैटिन अमेरिका में संयुक्त राज्य अमेरिका के सभी श्रेणियों के उत्पादों की बिक्री होने से संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्पादकों की नज़र में लैटिन अमेरिकी अर्थव्यवस्था बड़ी लाभदायक और सुरक्षित बाज़ार बन गई थी। विदेशी व्यापार मुख्य प्राण शक्ति बनने का परिणाम यह हुआ कि आर्थिक मज़बूती और आगे विकास के लिए लैटिन अमेरिकी अर्थव्यवस्था संयुक्त राज्य अमेरिका के बाज़ार पर आश्रित हो गई।

6.2.4 आर्थिक उन्नति और विकास में वर्तमान प्रवृत्तियाँ

यद्यपि लैटिन अमेरिका संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य औद्योगिक राष्ट्रों के उत्पादों का निरंतर महत्वपूर्ण बाज़ार बनता जा रहा था और कच्चे माल का महत्वपूर्ण स्रोत था तो भी इन दोनों महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उसकी आर्थिक उन्नति दर इसी अनुपात में नहीं थी। उदाहरण के लिए 1990 के दशक में लैटिन अमेरिकी और कैरिबियन राष्ट्रों में विश्व बैंक के अनुसार सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product – GDP) की वार्षिक दर 3.4 प्रतिशत थी। जो 1980 के दशक में 1.7 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर से काफी अच्छी थी। विश्व बैंक के वहीं आँकड़े यह भी पुष्टि करते हैं कि लैटिन अमेरिका में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 1972 और 1992 के बीच 3.7 गुणा बढ़ा। लेकिन इसी तुलनात्मक संदर्भ के अनुसार इसी अवधि में संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद चार गुणा बढ़ा है जो लैटिन अमेरिका और संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्यों के बीच आर्थिक स्थिति में बढ़ते अंतर का द्योतक है।

लेकिन क्षेत्रीय दर किसी एक देश की स्थिति के बारे में बहुत अधिक नहीं वर्णन करती है। लैटिन अमेरिका में ही प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में काफी सीमा तक भिन्नताएँ हैं। तेज़ी से विकसित होते देशों में एक ब्राज़ील देश का 1972 से 1992 के बीच प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 4.9 गुणा बढ़ा जो इसी अवधि में संयुक्त राज्य अमेरिका से भी अधिक है। दूसरी तरफ लैटिन अमेरिका में सर्वाधिक तेल भण्डार वाले वेनेजुएला में यह वृद्धि दर 2.2 गुणा ही रही। चिली का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 2.5 गुणा था जबकि लैटिन अमेरिका के सर्वाधिक निर्धन देश पैरागुवे की 1972 से 1992 के बीच यह वृद्धि दर 4.6 गुणा थी। यह याद रखने की बात है कि इन सभी देशों में अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में उनके मुख्य निर्यात संयुक्त राज्य अमेरिका की दरों में हुए परिवर्तन का प्रभाव पड़ा है। लेकिन उनके अलग-अलग राष्ट्रीय उत्पादन दर में व्यापक भिन्नताओं के कारण यह माना जा सकता है कि समग्र आर्थिक विकास और उन्नति का अध्ययन करना एक जटिल प्रक्रिया है। इस क्षेत्र में भेद भिन्नताएँ हमें बताती हैं कि उन्नति और विकास बाहरी और आंतरिक दोनों प्रकार से आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक तथ्यों से प्रभावित होती है।

6.3 सार्वभौमिक निर्भरता

सार्वभौमिक निर्भरता का प्रायः यह अर्थ होता है कि सभी देश उन्नति और विकास के अनेक महत्वपूर्ण आयामों में पर्याप्त रूप से आत्मनिर्भर नहीं होते हैं। इसकी अपेक्षा वे अपनी आर्थिक गतिशीलता के लिए अनेक बाहरी स्रोतों पर अधिक आश्रित रहते हैं।

6.3.1 निर्भरता क्या है?

कुल मिलाकर निर्भरता विदेश व्यापार, निवेश तकनीक स्थानांतरण, सैन्य साजो-सामान और उत्पादक विचारधारा के क्षेत्र में किसी देश की महत्वपूर्ण स्थिति का वर्णन करती है। इन सभी आयामों में कार्य करने के लिए कोई भी देश विदेशी बाज़ार, कार्यकर्त्ताओं, निवेश और तकनीक पर निर्भर करता है। ऐसी सहायता के अभाव में राष्ट्र गतिहीन हो जाता है तथा अर्थव्यवस्था ढह जाती है। लैटिन अमेरिका के संदर्भ में देश अपने विदेशी निवेश, सहायता, तकनीक स्थानांतरण और चलचित्रों के रूप में सांस्कृतिक उत्पादों सहित उत्पादक विचारधाराओं के लिए मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका पर निर्भर करते थे। लैटिन अमेरिकी देश अपने उत्पादों की बिक्री के लिए आनुपातिक रूप से भी संयुक्त राज्य अमेरिका के बाज़ारों पर ही निर्भर करते थे।

6.3.2 मुख्य पक्ष

संयुक्त राज्य अमेरिका और लैटिन अमेरिका के बीच उत्पादों और सेवाओं के विषम आदान-प्रदान के तीन मुख्य पक्ष हैं: (1) संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्पादक बहुराष्ट्रीय निगम; (2) लैटिन अमेरिकी राज्य; (3) लैटिन अमेरिकी उद्योगपति। संयुक्त राज्य अमेरिका के बहुराष्ट्रीय निगम, लैटिन अमेरिका को नए उत्पाद, निवेश और सेवाएँ प्रदान करने के उत्प्रेरक हैं। इन बहुराष्ट्रीय निगमों के उदाहरण हैं: जनरल इलैक्ट्रिक, माइक्रो सॉफ्ट, जेवसन, जनरल मोटर्स तथा फोर्ड। ये वृहत निगम हैं जिनकी सम्पत्तियाँ अधिकतर लैटिन अमेरिकी अर्थव्यवस्था से अधिक है। उनके पास लैटिन अमेरिका के विपरीत अपने पक्ष में व्यापार का मूल्य एवं शर्तें प्रभावित करने की शक्तियाँ हैं। लैटिन अमेरिकी देश इन विदेशी संचालकों की सहायक आर्थिक, निवेश और कर नीतियों को लागू करने के द्वारा इन बृहत निगमों की स्थिति को सुदृढ़ करते हैं। अंत में लैटिन अमेरिकी उद्योगपति इस गोरख धंधे में तीसरा पक्ष है। उनमें से अधिकतर बाज़ार में भागीदारी के द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका के बहुराष्ट्रीय निगमों से निकट संपर्क में रहते हैं। अधिकतर लैटिन अमेरिकी औद्योगिक निगम बड़े संयुक्त राज्य अमेरिका

के निगमों के सहायक संगठन हैं। इन तीन पक्षों के सक्रिय सहयोग के माध्यम से निर्भरता चक्र बना रहता है। यह शताब्दियों से चल रहा है।

6.4 उन्नति और विकास के महत्वपूर्ण सिद्धान्त

लैटिन अमेरिकी देशों की उन्नति और विकास के अनेक सिद्धान्तों के संदर्भ में व्याख्या की जा सकती है। हम चार बड़े सिद्धान्तों का वर्णन करेंगे; उदार बहुवादी, निर्भरता/विश्व व्यवस्था, विकासात्मक तथा नव उदारवादी सिद्धान्त।

6.4.1 उदार बहुलवादी सिद्धान्त

यह सिद्धान्त मुख्यतः व्यक्तियों से सम्बंधित है जो समाज का निर्माण करते हैं। यह इस तथ्य पर बल देता है कि जब व्यक्तियों को अपने एकदम उचित आर्थिक और राजनीतिक हित पूरे करने की अनुमति होती है तो व्यक्ति मात्र का कल्याण होता है। इस सिद्धान्त में सामूहिक कल्याण को व्यक्ति मात्र के हितों के समूह के रूप में परिभाषित किया गया है। एडम स्मिथ की प्रशंसनीय पुस्तकों के अनुसार उदारवादी सिद्धान्त बाज़ार की उस अदृश्य शक्ति में विश्वास करता है जो स्वतः आत्म नियंत्रित समाज का निर्माण करती है।

फिर भी इस सिद्धान्त में अनेक लोगों ने एक अति महत्वपूर्ण धारणा की अनदेखी की है। आत्म नियंत्रित बाज़ार की धारणा तभी संभव है जब तक निष्पक्ष प्रशासनिक एवं संस्थात्मक आधारभूत संरचना प्रदान की जाए। पूँजीवाद इस प्रकार के आधारभूत समर्थन के अभाव में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकता। लैटिन अमेरिका में पूँजीवाद के कार्य संचालन के लिए आवश्यक आधारभूत कार्य संरचना को बनाए रखने के लिए पर्याप्त व्यक्ति या निगम नहीं है अतः राज्य की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती हो सकती है।

आर्थिक व्यवहार के सर्वोच्च निर्णायक के रूप में बाज़ार की भूमिका पश्चिमी यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में कार्य करती हो लेकिन लैटिन अमेरिका में प्रायः एक दृढ़ एवं मध्यस्थता करने वाले राज्यों की उपस्थिति बाज़ार संचालन के लिए आवश्यक होती है। निःसंदेह यह स्थिति 1940, 1950 और 1960 के दशकों में विद्यमान थी जब राज्य के नेतृत्व में अनेक विकास कार्य आरंभ किए गए थे। अनेक विद्वानों ने इसे लैटिन अमेरिकी विकास की इस अवधि को आयात विकल्प औद्योगीकरण (Import Substitution Industrialisation – ISI) चरण के रूप में माना है। संक्षेप में आयात विकल्प औद्योगीकरण का भावार्थ है कि राष्ट्रीय बाज़ार का ज़रूरी पोषण करने वाले घरेलू उद्योगों में प्रोत्साहन, अनुदान और संरक्षण के द्वारा प्रवाह बढ़ाने के लिए देशों के द्वारा अनेक नीतिगत उपाय किए गए।

राष्ट्रीय बाज़ार पर इतना अधिक बल क्यों दिया गया है? इसका कारण यह है कि आयात विकल्प औद्योगीकरण लैटिन अमेरिकी देशों द्वारा विश्व बाज़ार में प्रत्यक्षतः अनुभव की गई दीर्घकालीन सुभेद्यता की प्रतिक्रिया है। काफी समय से लैटिन अमेरिका मूलभूत उत्पादों का निर्यातक था लेकिन मूल्यों पर उनका अपना ज़ोर चलता था। ऐतिहासिक रूप से लैटिन अमेरिकी देश वित्तीय संतुलन में घाटे का सामना कर रहे थे। दूसरे शब्दों में उन्हें हमेशा अपने देश से किए गए निर्यात मूल्यों की तुलना में आयत किए गए सामान का अधिक मूल्य चुकाना पड़ता था। आयात विकल्प औद्योगीकरण के लागू होने से इस प्रवृत्ति के उलटने की आशा की जाती थी। इसमें राज्य की सक्रिय भूमिका को शामिल किया गया था। संपूर्ण उन्नीसवीं शताब्दी तथा बीसवीं शताब्दी के आरंभ में हस्तक्षेप न करने की पिछली आर्थिक प्रवृत्ति की समुचित समीक्षा आवश्यक थी। लैटिन अमेरिका तथा विश्व आर्थिक शक्तियों के बीच मुख्य निर्णायक के रूप में बाज़ार से लैटिन अमेरिका को कई क्षेत्रों में लाभ नहीं हो

रहा था। इसमें सबसे प्रमुख था आर्थिक और सामाजिक असमानता को स्थाई बनाना। इससे स्पष्ट है कि 1940 के दशक में नियंत्रित बाज़ार के पक्ष में उदार बहुवादी विचारधारा को पूरी तरह अस्वीकृत कर दिया गया जिसमें राज्य ने सक्रिय भूमिका निभाई।

6.4.2 निर्भरता/विश्व व्यवस्था सिद्धान्त

लैटिन अमेरिकी विकास का दूसरा बड़ा सिद्धान्त निर्भरता/विश्व व्यवस्था के विद्वानों ने प्रस्तुत किया। निर्भरता परम्परा में विद्वान लोग समाज के मार्क्सवादी लेनिनवादी बौद्धिक दृष्टिकोण से बहुत प्रभावित थे। सामान्यतः ये विद्वान राज्य को एक ऐसे स्वतंत्र पक्ष के रूप में देखते थे जो अभावग्रस्त वर्ग की कीमत पर पूँजीवादी वर्ग के हितों को पूरा करने के लिए उन्हें दबाने का साधन है। लैटिन अमेरिकी राज्य को प्रभुत्व वर्गों के एजेंट के रूप में माना गया जो औद्योगिक देशों के बहुराष्ट्रीय निगमों के आर्थिक और राजनीतिक हितों को पूरा करता है।

इस परिप्रेक्ष्य में विश्व व्यवस्था परिवर्तन तर्क में विचलन पैदा करता है। वह केवल वर्ग पर ध्यान केन्द्रित करने के स्थान पर विश्व व्यवस्था में राज्य की स्थिति को अधिक महत्व प्रदान करता है। इस विचारधारा में उन्नति को सुगम बनाने या संघर्ष को समाप्त करने की राज्य क्षमता देश की संरचनात्मक स्थिति पर निर्भर करती है। वंशानुगत तीन स्तरीय व्यवस्था में लैटिन अमेरिकी देशों के सबसे नीचे रहने की संभावना है और इस प्रकार राज्य वर्ग के पास सफल लैटिन अमेरिका रूपांतरण के लिए आवश्यक क्षमता का अभाव है।

1970 और 1980 के दशकों में राज्य के बारे में इन एकपक्षीय विचारों पर प्रश्न किए जाने लगे। आरंभिक दशकों के विकास अनुभवों के आधार पर अनेक विद्वानों ने उपरोक्त सिद्धान्तों की वैधता को चुनौती दी। बदलते अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश ने संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य प्रमुख पूँजीवादी राष्ट्रों को गहन और अनिश्चित आर्थिक और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के दौर में अधिक कट्टरवादी होने के रूप में देखा गया। जिससे विश्व भर में राज्य की और अधिक स्वतंत्र गतिविधियों की उत्पत्ति हुई।

1970 के दशक के उत्तरार्द्ध और 1980 के दशक के आरंभ में प्रकाशित अनेक अध्ययनों ने लैटिन अमेरिकी राज्यों को विकास प्रक्रिया में अधिक शक्तिशाली और अपेक्षाकृत स्वतंत्र कर्ता के रूप में प्रस्तुत किया है, कुछ ने इसका कारण प्रस्तुत किया है कि क्यों और कैसे आधुनिक राज्य वर्गों की संरचना हुई और उन्होंने अपने उद्देश्यों को पूरा करने पर ज़ोर दिया। लैटिन अमेरिका में यह तर्क ऐतिहासिक रूप से सिद्ध हुआ क्योंकि आयात विकल्प औद्योगीकरण नीति लागू करने के माध्यम से आंतरिक बाज़ार को समेकित एवं दृढ़ करने में राज्य का व्यापक प्रभाव था। आयात विकल्प औद्योगीकरण के अन्तर्गत सक्रिय राज्य प्रोत्साहन और अनुदान ने विदेशी निवेश विशेषतः निर्माण में निवेश बढ़ाने में योगदान दिया। सीमा शुल्क, मुद्रा विनिमय और आयात के रूप में राज्य प्रोत्साहनों ने लैटिन अमेरिका में उद्योग स्थापना के लिए विदेशी बहुराष्ट्रीय निगमों को प्रोत्साहित किया।

विदेशी निवेश के मामले में राज्य ने आधारभूत साधन प्रदान किए तथा निवेश को उत्पादक बनाने के लिए पूरक आर्थिक कार्य किए। निःसंदेह विभिन्न देशों में राज्य की भूमिका भिन्न भिन्न थी और इस प्रकार उन्नति और विकास की उपलब्धियों में भी भिन्नता थी।

फिर भी, हाल ही में कुछ निर्भरता उन्मुखी विद्वानों ने औद्योगिक वृद्धि को बढ़ाने के लिए विदेशी पूँजी और राज्य वर्ग के सहयोग पर विचार की संभावना भी व्यक्त की। कुछ मामलों में इस सहयोग में घरेलू उद्योगपतियों को भी शामिल किया गया। इस प्रकार की युक्ति के अन्तर्गत बहुराष्ट्रीय निगमों ने औद्योगिक क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए राज्य वर्गों के साथ सहयोग किया। इससे लैटिन अमेरिका को घरेलू बाज़ारों का अन्तर्राष्ट्रीयकरण करने में सहायता मिली। विशिष्ट रूप से निर्भरता के विशिष्ट

स्वरूपों से भिन्न नए सहयोगों ने संपूर्ण अर्थव्यवस्था में भिन्नता ला दी। फिर भी, ऐसा औद्योगीकरण केवल राज्य वर्ग की सहायता से ही संभव हुआ।

6.4.3 विकासात्मक राज्य

1980 के दशक तक कई अन्य क्षेत्र विशेषतः पूर्वी एशिया में अनेक क्षेत्र आर्थिक उन्नति दर के मामले में अपेक्षाकृत आय के समान वितरण और सामाजिक उन्नति के अर्थ में लैटिन अमेरिका से आगे निकल गए। इस प्रकार की विशिष्ट क्षेत्रीय प्रक्रियाओं पर अनेक लैटिन अमेरिकी देशों के शासकीय क्षेत्रों में बहस आरंभ हो गई।

एक विकासात्मक राज्य का मुख्य उद्देश्य सभी क्षेत्रों में तो नहीं लेकिन अर्थव्यवस्था के कुछ चुने हुए क्षेत्रों में नेतृत्व और सक्रिय मध्यस्थता करना है और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अनेक लैटिन अमेरिकी देशों ने विशिष्ट विकासात्मक उद्देश्यों के मार्ग दर्शन को और बढ़ावा देने के लिए यही कार्य किया। निजी क्षेत्र को नियंत्रित करने और सार्वभौमिक रूप से अधिक प्रतिस्पर्द्धात्मक बनाने में सहायता करने के लिए कर, अनुदान, ऋण नियंत्रण तथा मूल्य निर्धारण के रूप में राज्य प्रोत्साहनों का प्रयोग किया गया।

अनेक पर्यवेक्षकों ने ध्यान दिया है कि सफल विकासात्मक राज्य के पास स्वायत उच्च स्तरीय नौकरशाही, दूसरे निजी व्यापार के साथ घनिष्ठ संस्थात्मक सहयोग होता है। लेकिन व्यापार से भिन्न तत्व जैसे श्रम और प्रसिद्धी क्षेत्र के सम्बंध में विकासात्मक राज्य की अधिकारितावाद संसार में प्रसिद्ध है। यद्यपि हाल के वर्षों में इस अधिकारवाद में कुछ परिवर्तन होता नज़र आ रहा है तो भी विकासात्मक राज्य की कार्य प्रणाली में अभी भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रोत्साहन से अनेक लैटिन अमेरिकी देशों ने कुछ पश्चिमी एशियाई नीति संरचना विशेषकर कम से कम निजी व्यापार के साथ संस्थागत सहयोग का अनुकरण करना आरंभ किया। लैटिन अमेरिकी राज्य वर्गों के द्वारा पूर्व एशियाई आर्थिक अनुभवों को दोहराने से "नव उदारवादी राज्य" का उदय होने में योगदान मिला जिसकी चर्चा अब हम करने जा रहे हैं।

6.4.4 नव-उदारवादी राज्य

नव उदारवादी राज्य वर्तमान आर्थिक उदारीकरण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग है जिसे अब "सार्वभौमिकीकरण" के नाम से भी जाना जाता है। कुल मिलाकर आर्थिक सार्वभौमिकीकरण की विशेषताएँ इस प्रकार हैः (क) निर्यात विशेष कर ग़ैर-कृषि उत्पादों के निर्यात पर अधिक ज़ोर देना, (ख) औद्योगिक क्षेत्र में निर्माण पर अधिक ज़ोर देना (ग) पूँजी और श्रम में इस प्रकार विषम सम्बंध स्थापित करना कि देश से बाहर पूँजी अधिक गतिशील हो और उपलब्ध सस्ते श्रम का उपयोग किया जा सके, (घ) राज्य आर्थिक नियंत्रण में महत्वपूर्ण कमी हो तथा कुछ सार्वजनिक उद्योगों का निजीकरण हो तथा (ङ) अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय एजेंसियों जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक, विदेशी बहुराष्ट्रीय निगमों, घरेलू उद्योगपति और राज्य वर्ग के साथ सहयोग। संपूर्ण लैटिन अमेरिका में यह सभी विशेषताएँ एक समान मात्रा में विद्यमान नहीं है। नया मार्ग यह है कि राज्य की भूमिका को कम किया जाए तथा अर्थव्यवस्था में व्यापक उत्थान के लिए निजी अन्तर्राष्ट्रीय एवं घरेलू एजेंटों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

6.4.5 सिद्धान्तों को लागू करना

संपूर्ण उन्नीसवीं शताब्दी और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में लैटिन अमेरिकी राज्यों ने प्रायः उदारवादी राज्यों के रूप में कार्य किया जैसा कि उदार-बहुवादी सिद्धान्त द्वारा प्रस्तुत किया गया था। प्रायः राज्य

अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप नहीं करते थे। उनका आर्थिक नीतियों ने विदेशी निवेश को सुगम बनाया पहले तो यूरोप और बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका से पर्याप्त निवेश हुआ, यद्यपि लैटिन अमेरिका आर्थिक उन्नति के स्वरूप का पालन कर रहा था तो भी उसके उत्थान का स्तर अधिकतर यूरोपीय और संयुक्त राज्य अमेरिका के देशों से पीछे रहा। पर्याप्त रूप से आत्म निर्भर उत्थान के अभाव में निर्भरता और विश्व व्यवस्था सिद्धान्तों पर निर्भरता को बढ़ावा दिया। इन सिद्धान्तों का कथन है कि विश्व आर्थिक की प्रकृति ने लैटिन अमेरिका को स्थाई रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका और पश्चिमी यूरोप पर निर्भर बना दिया। इस स्थिति से बाज़ार शक्तियों की भूमिका में परिवर्तन करने में राज्यों की प्रभावशाली भूमिका को भी सीमित बना दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अधिकतर लैटिन अमेरिकी देश उन विकास आदर्शों का पालन कर रहे हैं जिनमें अर्थव्यवस्था में राज्य की सक्रिय मध्यस्थता आवश्यक होती है। राज्य विकास के कार्यक्षेत्र के सभी सम्बंधित क्षेत्रों के लिए नीतियाँ बनाते हैं। वे आधारभूत संरचनाएँ बनाते हैं, विदेशी निवेश का नियमन करते हैं और आर्थिक दुष्प्रभावों विशेषतः अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में मूल्य के उतार-चढ़ाव के विरुद्ध निर्धन और निम्न मध्य वर्गों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हैं। फिर भी, अर्थव्यवस्थाएँ निरंतर बहुमूल्य विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए आवश्यक वस्तुएँ एवं सेवाओं के आयात के बदले चुकाना पड़ता है, या जब कभी मूल्य कम होते हैं या जब कभी किसी आर्थिक कार्य करने या विस्तार करने की आवश्यकता होती तो राज्य विदेशी बैंकों और अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियों जैसे विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से धन उदार लेते थे। यदि विद्यमान ऋण को चुकाने की क्षमता है तो ऋण लेना एक अच्छा विचार है। लेकिन ये देश अपने निर्यात उत्पादों की बिक्री पर इतना अधिक आश्रित हैं कि निर्यात मूल्यों में मामूली सी गिरावट भी उनकी ऋण लौटाने की क्षमता को बरबाद कर देती है। 1980 के पूरे दशक में एक के बाद एक लैटिन अमेरिकी देश अन्तर्राष्ट्रीय बैंकों को ऋण लौटाने में भारी बोझ का सामना करते रहे। वित्तीय-असंतुलन की इस स्थाई समस्या ने आंशिक रूप से विकास कार्य में राज्य की भूमिका निभाने पर पुनर्विचार में योगदान दिया। इसके बाद तुलनात्मक अध्ययन किए गए और उनसे ज्ञात हुआ कि विश्व के अन्य भागों विशेषतः पूर्वी एशिया में अधिक विकास हुआ है। फिर विश्व में सैद्धान्तिक रूप से युद्ध के स्वरूप में काफी परिवर्तन आया है। राज्य नियंत्रण और सामाजिक स्वरूपों में परिवर्तन से पूर्ववर्ती पूर्वी क्षेत्र (ईस्ट ब्लाक) के देशों के बाज़ार के पक्ष में परिवर्तन आने व विकास विचार की पुनः संपूर्ण समीक्षाएँ की गई जिससे नव-उदारवादी राज्य उत्पत्ति की प्रक्रिया आरंभ हुई। लेकिन लगभग 20 वर्ष से अधिकतर लैटिन अमेरिकी देश कुछेक इस प्रकार की आर्थिक उदारीकरण (या नव उदारीकरण) नीति का प्रयोग कर रहे हैं।

नव-उदारवादी प्रयोग के अन्तर्गत आर्थिक उदारीकरण कार्यक्रमों की श्रेष्ठता के बारे में सभी उत्साह के बावजूद आर्थिक उत्थान किसी स्थाई आधार पर नहीं हो पाया है। इसके अतिरिक्त निर्यात पर पुनः ज़ोर देने से लैटिन अमेरिका की अर्थव्यवस्थाएँ संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ की अर्थव्यवस्थाओं में होने वाले उतार-चढ़ाव से पहले की अपेक्षा अधिक सुभेद्य बन गई हैं। हाल ही में आय विषमता और गरीबी के संकेत लैटिन अमेरिका के बारे में भी फीका चित्रण करते हैं। इस क्षेत्र में 1970 के दशक से आय वितरण की स्थिति निरंतर खराब है। साथ ही इस क्षेत्र के कुछ बड़े देशों के रक्षा बजट में भी कुछ वृद्धि देखने में आई है। यह सामाजिक विकास के मूल्य पर किया गया है। ये बड़े देश जैसे ब्राज़ील, मैक्सिको, अर्जेन्टीना, और पेरू लैटिन अमेरिका के अग्रणी देश हैं और इनके रक्षा बजट में वृद्धि से लैटिन अमेरिकी राज्य वर्गों की प्राथमिकताओं के बारे में चिन्ता का विषय बन गई।

6.5 सारांश

आर्थिक उदारीकरण मुक्त बाज़ार शक्तियों के संचालन, विदेशी निवेश, विदेशी व्यापार के क्षेत्रों में राज्य

के कम नियंत्रण तथा घरेलू अर्थव्यवस्था मे नई और आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल पर ज़ोर देता है। लैटिन अमेरिका में औपनिवेशवाद से ही क्षेत्र का आर्थिक विकास अधिकांशतः बाहरी शक्तियों के अधीन रहा है और मूलभूत क्षेत्र में लगा रहा है जो ताम्बा, तेल, सोना, टीन जैसे कच्चा माल और कृषि उत्पादन जैसे काफी, कोक और चीनी का उत्पादन करता रहा है। स्वतंत्रता के बाद लैटिन अमेरिका को विश्व अर्थव्यवस्था में शामिल करने के लिए यूरोपवासियों ने परिवहन और अन्य आधारभूत संरचनाओं में निवेश किया या फिर बड़े विदेशी बहुराष्ट्रीय निगमों द्वारा सीधे निवेश सहित निर्यात के लिए स्रोतों को संसाधित करने वाले उद्योगों में निवेश किया। बीसवीं शताब्दी के मध्य तक संयुक्त राज्य अमेरिका ने लैटिन अमेरिका में विदेशी निवेश के मुख्य स्रोत के रूप में यूरोप को पलट दिया। लेकिन आर्थिक उत्थान के संदर्भ में सकल घरेलू उत्पाद संयुक्त राज्य अमेरिका और लैटिन अमेरिका दोनों में बढ़ा है लेकिन उसी अवधि में संयुक्त राज्य अमेरिका में चार गुणा वृद्धि हुई है।

निर्भरता का अर्थ है कि किसी देश की विदेश व्यापार, विदेशी निवेश, तकनीक स्थानांतरण, सैन्य सामान तथा उत्पादक विचारों के क्षेत्र में अन्याधीन होना। इन सभी आयामों में कोई देश विदेशी कर्ताओं पर निर्भर करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका और लैटिन अमेरिका के बीच विषम उत्पादों और सेवाओं के विनिमय में तीन मुख्य पक्ष होते हैं: (1) संयुक्त राज्य अमेरिका के बहुराष्ट्रीय निगम; (2) लैटिन अमेरिकी राज्य; और (3) लैटिन अमेरिकी उद्योगपति। लैटिन अमेरिकी देशों के उत्थान और विकास का वर्णन बड़े सिद्धान्तों के संदर्भ में किया जा सकता है। उदार बहुवादी, निर्भरता/विश्व व्यवस्था; विकासात्मक राज्य और नव-उदारवादी। संपूर्ण उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी के आरंभ में लैटिन अमेरिकी राज्यों ने प्रायः उदार राज्यों के रूप में कार्य किया है जैसा कि उदार बहुवादी सिद्धान्त में प्रस्तुत किया गया है। फिर भी, इसका विकास अधिकांश यूरोप एवं संयुक्त राज्य अमेरिका से कम ही रहा। इससे निर्भरता सिद्धान्तों का उदभव हुआ जिनका तर्क था कि विश्व अर्थव्यवस्था की प्रकृति ही ऐसी है कि उसने लैटिन अमेरिका की स्थिति को स्थाई बना दिया है। यह संयुक्त राज्य अमेरिका और पश्चिमी यूरोप पर निर्भर करता है। काफी विलम्ब से लैटिन अमेरिकी देशों ने कुछ आर्थिक उदारीकरण (या उदारवादी) नीतियों के साथ प्रयोग करना आरंभ किया है तो भी आर्थिक उत्थान स्थाई नहीं हुआ है। दूसरी तरफ निर्यात पर नया ज़ोर देने से लैटिन अमेरिकी अर्थव्यवस्थाएँ संयुक्त राज्य अमेरिका की और यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं के उतार-चढ़ाव से और अधिक प्रभावित होने वाली बन गई हैं।

6.6 अभ्यास प्रश्न

1) लैटिन अमेरिका का आर्थिक विकास कैसे विकसित हुआ है?

2) लैटिन अमेरिका के आर्थिक विकास में संयुक्त राज्य अमेरिका के द्वारा कैसी भूमिका निभाई जाती है?

3) निर्भरता से आप क्या समझते हैं? लैटिन अमेरिका में निर्भरता सिद्धान्त की विकास के अन्य बड़े सिद्धान्तों से तुलना कीजिए।